शिक्षा संकाय

तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर।

अनुक्रमणिका

अध्याय–प्रथम : प्रस्तावना **1–53**

(1) शोध की पृष्ठभूमि

(2) सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

(3) शोध की आवश्यकता

(4) शोध की समस्या

(5) शोध का उद्देश्य

(6) शोध की प्रकृति

(7) तथ्य संकलन के स्रोत

(8) शोध की सीमा

(9) शोध में आने वाली कठिनाईयाँ

अध्याय–द्वितीय जे. कृष्णमूर्ति जी का जीवन परिचय **54–88**

(1) जे. कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व के बारे में विद्वानों के मत

(2) शिक्षा के क्षेत्र में जे. कृष्णमूर्ति जी का योगदान

अध्याय–तृतीय जे. कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन **89–139**

(1) दर्शन का अर्थ

(2) शिक्षा एवं दर्शन में सम्बन्ध

(3) कृष्णमूर्ति दर्शन की विशेषताएँ

(4) सत्य की खोज कैसे

(5) सत्य के सम्बन्ध में जे.कृष्णमूर्ति के विचार

(6) जे. कृष्णमूर्ति का आत्मज्ञान के सम्बन्ध में विचार

(7) जे. कृष्णमूर्ति के ईश्वर सम्बन्धी विचार

(8) आदर्शवादी शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में जे. कृष्णमूर्ति की अवधारणा

(9) जे. कृष्णमूर्ति के विचार में प्रकृतिवाद

(10) प्रयोजनवादी शिक्षा–दर्शन के सम्बन्ध में उनकी अवधारणा

(11) यथार्थवादी शिक्षा–दर्शन के सम्बन्ध में जे. कृष्णमूर्ति की अवधारणा

(12) अस्तिवादी शिक्षा–दर्शन के सम्बन्ध में जे. कृष्णमूर्ति की धारणाएँ

(13) यथार्थवादी शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में जे. कृष्णमूर्ति की अवधारणा

(14) अस्तिवादी शिक्षा–दर्शन के सम्बन्ध्ण में जे. कृष्णमूर्ति की अवधरणाएँ

(15) परममुक्तिवादी शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में जे. कृष्णमूर्ति की अवधारणाएँ

(16) मानवतावादी शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में में जे. कृष्णमूर्ति की अवधारणा

(17) जे. कृष्णमूर्ति का मानव एवं उसकी परमागति के सम्बन्ध में विचार

अध्याय–चतुर्थ शैक्षिक विचारधारा **140–181**

(1) शिक्षा का शाब्दिक अर्थ

(2) शिक्षा के उद्देश्य के सम्बन्ध में जे.कृष्णमूर्ति के विचार

(3) स्वयं के जानने के सम्बन्ध में

(4) बालकों की जिज्ञासा के सम्बन्ध

(5) भय के सम्बन्ध में
(6) विवेकपूर्ण विद्रोह की क्षमता जागृत करने के सम्बन्ध में
(7) अनुशासन की समझ उत्पन्न करने के सम्बन्ध में
(8) स्वतंत्र प्रेम एवं अच्छाई प्रस्फुटन करने के सम्बन्ध में
(9) स्वज्ञान के सम्बन्ध में
(10) अहंकार से मुक्ति करने के सम्बन्ध में
(11) जीवन जीने की कला सीखने के सम्बन्ध में
(12) जीवन में मृत्यु का बोध कराने के सम्बन्ध में
(13) वास्तविक चरित्र का निर्माण करने के सम्बन्ध में
(14) शरीर, मन एवं हृदय के बीच सामंजस्य स्थापित करने के सम्बन्ध में
(15) स्वयं को आलोकित करने में सहायता करने के सम्बन्ध में
(16) जीवन के रहस्यों के सम्बन्ध में
(17) शिक्षा के कार्य के सम्बन्ध में
(18) शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक व्यवस्था के सम्बन्ध में
जे. कृष्णमूर्ति के विचारों की वर्तमान समय में उपादेयता

अध्याय–पंचम शिक्षक एवं शिक्षालय के संकल्पना के सम्बन्ध में जे. कृष्णमूर्ति जी का विचार **182–201**

(1) शिक्षक का स्वरूप
(2) शिक्षक का दायित्व
(3) शिक्षक के कार्य
(4) शिक्षालय का स्वरूप
(5) शिक्षा एवं अनुशासन

अध्याय–षष्ठ निष्कर्ष **202–227** संदर्भ ग्रन्थ–सूची **228–232**